SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

ग्वालियर संसदीय क्षेत्र की राजनीति में सिंधिया परिवार का प्रभाव : एक अध्ययन

मोहर सिंह, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
चेतना श्रीवास्तव, (Ph.D.) राजनीति विज्ञान विभाग
एस.एल.पी. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
मोहर सिंह, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत
चेतना श्रीवास्तव, (Ph.D.) राजनीति विज्ञान विभाग
एस.एल.पी. शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/02/2021
Revised on : -----
Accepted on : 27/02/2021
Plagiarism : 01% on 20/02/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Saturday, February 20, 2021
Statistics: 16 words Plagiarized / 1765 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

Xokfy;j lal.knh; {ks= dh jktuhfr esa flaf/k;k ifjokj dk izHkko % ,d v/;;u 'kks/k lkj Xokfy;j lalnh; {ks= Hkkjrh; x.kjkT; ds ân; izkar e/;izns'k ds iwohZ Hkkx esas 'fLFkr gSA Xokfy;j jktoa"k dh ikfjokfjd jktuSfrd i"BHkwfe dk izkjEHk flaf/k;k jktoa"k ¼Xokfy;j½ ds lalFkkid jk.kksth flaf/k;k ds izknqHkkZo ls ekuk tkrk gSA jk.kksth flaf/k;k us is"kok ckykth fo"oukFk ds ;gk¡ lokjr jgus ds mijkar] viuh jktuSfrd dq"kyrk "kkS;Z ,oa ohjrk ds cy ij vius vkidks mPp in ij LFkkfir fd;kA jk.kksath flaf/k;k us lnSo is"kok ,oa gksYdj ds lkFk lkeatL; cuk;s

शोध सार

ग्वालियर संसदीय क्षेत्र भारतीय गणराज्य के हृदय प्रांत मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है। ग्वालियर राजवंश की पारिवारिक राजनैतिक पृष्ठभूमि का प्रारंभ सिंधिया राजवंश (ग्वालियर) के संस्थापक राणोजी सिंधिया के प्रादुर्भाव से माना जाता है। राणोजी सिंधिया ने पेशवा बालाजी विश्वनाथ के यहाँ सेवारत रहने के उपरांत, अपनी राजनैतिक कुशलता शौर्य एवं वीरता के बल पर अपने आपको उच्च पद पर स्थापित किया। राणोंजी सिंधिया ने सदैव पेशवा एवं होल्कर के साथ सामंजस्य बनाये रखने की नीति को अपनाया, इसी नीति के परिणामस्वरूप उन्होंने उत्तर भारत में मराठा राज्य को मध्य भारत के मालवा के क्षेत्र एवं चंबल के दक्षिणी प्रदेशों में सशक्त तरीके से प्रतिष्ठित किया। अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को गतिशीलता प्रदान करते हुये राणोंजी सिंधिया ने पेशवा से ''राज मुद्रा'' का अधिकार प्राप्त किया एवं उज्जैन को अपनी राजनैतिक एवं प्रशासनिक राजधानी के रूप में स्थापित किया।'

मुख्य शब्द

ग्वालियर संसदीय क्षेत्र, सिंधिया परिवार.

सिंधिया वंश का सम्पूर्ण इतिहास साहसिक एवं सामाजिक अभियानों तथा बलिदानों से भरा पड़ा है। ग्वालियर राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत सिंधिया राजवंश के शासकों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है:

राजमाता विजयाराजे सिंधिया

राजमाता विजयाराजे सिंधिया का जन्म 12 अक्टूबर 1919 को सागर जिले में (करवा चौथ) पर्व पर हुआ था। किन्तु जन्म के नौ दिवस पश्चात् सन्निपात ज्वर के

कारण इनकी माता का निधन हो गया। श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया का विवाह उनकी सहमति से महाराजा जीवाजीराव के साथ मराठा राज्य की परम्परानुसार फरवरी 1941 ई. में सम्पन्न हुआ।[2]

राजमाता विजयाराजे सिंधिया ने अपना प्रथम चुनाव 1962 ई. में गुना संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और विजय प्राप्त की। ग्वालियर की जनता ने अपनी प्रिय महारानी जो अब उनके लिये राजमाता थी, उन्हें सदा आँखों पर उठाया तथा वे भारी बहुमत से विजयी हुयी।

सन् 1967 ई. के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस से मोहभंग होने के पश्चात् राजमाता ने जनसंघ के टिकिट पर करैरा और स्वतंत्र पार्टी की तरफ से गुना संसदीय क्षेत्र से चुनाव लड़ा तथा दोनों जगहों से विजय प्राप्त की वह सांसद पद छोड़कर विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बनी।[3]

सन् 1969 ई. में राजमाता को सागर विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया। आपातकाल लागू होने की स्थिति में राजमाता ने गिरफ्तारी दी तथा सन् 1979 ई. में इंदिरा गांधी के विरूद्ध रायबरेली से चुनाव लड़ा।[4]

सन् 1999 ई. का लोकसभा चुनाव राजमाता विजयाराजे नहीं लड़ सकी उनका स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 25 जनवरी 2001 को मौनी अमावस्या के दिन उन्होंने अपना शरीर त्याग दिया।

माधवराव सिंधिया

माधवराव सिंधिया द्वितीय का जन्म 10 मार्च 1945 ई. को समुद्रमहल, बम्बई (मुंबई), महाराष्ट्र में हुआ था। माधवराव सिंधिया, जीवाजीराव सिंधिया एवं विजयाराजे सिंधिया के एकमात्र पुत्र थे। माधवराव, जीवाजीराव एवं विजयाराजे सिंधिया के पाँच पुत्र–पुत्रियों में तीसरे नम्बर की संतान थे।

माधवराव सिंधिया का राज्यारोहण राजमाता विजयाराजे सिंधिया के मार्गदर्शन में 1966 ई. में ग्वालियर में सम्पन्न हुआ, तब माधवराव की आयु 21 वर्ष की थी। राजमाता विजयाराजे का सोचना था कि रियासत नहीं रही, फिर भी, भैया, 'महाराज की पदवी' का अधिकारी तो है, वह सिंधिया राजघराने का वारिस है, सिंधिया राजवंश की परम्परा से परिचित कराने की दृष्टि से राज्यारोहण समारोह सम्पन्न कराना आवश्यक है। वस्तुतः भारत सरकार ने पहले ही माधवराव सिंधिया को ग्वालियर का शासक स्वीकार कर लिया था। 12 जुलाई 1961 ई. को गृह मंत्रालय द्वारा भारत सरकार के सचिव पी. विश्वनाथन द्वारा जारी की गयी, घोषणा में कहा गया था कि भारत के राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 366/22 के अंतर्गत माधवराव सिंधिया को ग्वालियर के शासक के रूप में मान्यता देते हुये उन्हें अपने पिता महाराजा जीवाजीराव सिंधिया का उत्तराधिकारी घोषित किया जाता गया।

माधवराव सिंधिया को सन् 1997–98 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति का महासचिव बनाया गया, साथ ही सन् 1997 में अखिल भारतीय कांग्रेस की कार्यसमिति का सदस्य भी बनाया गया। कांग्रेस पार्टी के महासचिव के रूप में उन्हें उडीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों का प्रभारी बनाया गया। उन्होंने अपनी कुशल कार्यशैली से इन राज्यों में कांग्रेस को मजबूती प्रदान की। इसी कारण कांग्रेस में उनकी हैसियत लगातार बढ़ती गयी और लोकप्रिय नेता की छवि के साथ–साथ पार्टी के संचालन में उनकी कुशलता को भी व्यापक मान्यता मिली।

माधवराव सिंधिया को सन् 1999 ई. में तेरहवीं लोकसभा में कांग्रेस के उपनेता के रूप में स्वीकार किया गया। सिंधिया ने विदेशनीति, अर्थ नीति और सुरक्षा के प्रश्न पर प्रभावशाली हस्तक्षेप कर सरकार को कटघरे में खड़ा किया।[5]

माधवराव सिंधिया ने अपने अथक प्रयत्नों से ग्वालियर के विकास हेतु हर संभव प्रयास किया, उसी क्रम में उन्होंने ग्वालियर में 'भारतीय पर्यटन व यात्रा प्रबंध संस्थान' की स्थापना करवाई। माधवराव सिंधिया सन् 1995–1996 ई. तक मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय में कैबीनेट मंत्री रहे। मंत्री के रूप में उन्होंने अपनी विशिष्ट कार्यप्रणाली से अनेक कार्यों को अंजाम दिया।

माधवराव सिंधिया ने रेल्वे, नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन तथा मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय में मंत्री के

रूप में अपने प्रशासनिक कौशल से सभी को चौका दिया था। उन्होंने एक योग्य प्रशासक के रूप में विभिन्न मंत्रालयों का कुशलता से संचालन किया।

माधवराव सिंधिया की मृत्यु 30 सितम्बर 2001 को एक विमान दुर्घटना में हुयी, जब वे उत्तर प्रदेश से विधानसभा चुनावों में कांग्रेस के प्रचार हेतु दिल्ली से कानुपर जा रहे थे। उनका विमान दिन में मैनपुरी जिले के भौगाँव पुलिस स्टेशन थाना क्षेत्र के भैंसटोली गाँव के निकट दुर्घटनाग्रस्त हुआ। माधवराव सिंधिया की अचानक हुई मृत्यु ने समस्त देशवासियों को स्तब्ध कर दिया था।

यशोधरा राजे सिंधिया

राजकुमारी यशोधराराजे सिंधिया ग्वालियर राजघराने की सबसे प्रिय एवं छोटी राजकुमारी हैं, इनका जन्म 19 जून 1954 में हुआ था। यशोधराराजे सिंधिया बचपन से ही स्वतंत्र परिवेश में पलकर बड़ी हुई। खुले विचारों वाली कन्या, अपने जीवन पर किसी भी प्रकार का नियंत्रण नहीं चाहती थी।

यशोधराराजे सिंधिया की राजनीति में विशेष रूचि थी। राजनीति में अपनी माँ राजमाता विजयाराजे सिंधिया के आदर्शों पर चलने वाली यशोधराराजे बहुत कम समय में ही भारतीय जनता पार्टी की कुशल नेत्री बन गई एवं सभी वरिष्ठ पार्टीजनों का स्नेह तथा सम्मान उनको प्राप्त था। सन् 1990 से ज्यादातर समय यशोधराराजे भारत में रहने लगीं और अपनी माँ के संसदीय क्षेत्र गुना एवं शिवपुरी की देखरेख करती रहीं।

राजनीति में रहते हुए यशोधराराजे सिंधिया अपनी माँ के अधूरे कार्यों को पूरा करना चाहती हैं। यही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है जिसे पूरा करने के लिए वह सदैव प्रयत्नशील रहती हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश सरकार में खेलकूद एवं पर्यटन मंत्री के रूप में विराजमान हैं।

ज्योतिरादित्य सिंधिया

ज्योतिरादित्य सिंधिया जी का जन्म 1 जनवरी 1971 को मुंबई में हुआ। ज्योतिरादित्य सिंधिया निःसन्देह वर्तमान न केवल भारतीय वरन् विश्व पटल पर एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में स्थापित हैं। उनके इस विशिष्ट व्यक्तित्व का निर्माण एक लम्बी सामाजिक एवं सार्वजनिक प्रक्रिया के अधीन हुआ। ज्योतिरादित्य सिंधिया के व्यक्तित्व निर्माण में उनके जन्म के समय की परिस्थितियाँ, शिक्षा, वैवाहिक संस्कार एवं प्रभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

युवराज का जन्मोत्सव समारोह कई दिनों तक मनाया गया। परंपरागत नामकरण संस्कार 13वें दिन से प्रारम्भ हुआ, जब युवराज की चाची ने सामूहिक रूप से युवराज का नाम घोषित किया। राजमाता श्रीमंत विजयाराजे सिंधिया अपने पोते का नाम कुलदेवता के नाम पर 'ज्योतिबा' रखना चाहती थी, परंतु युवराज के माता–पिता उनका नाम विक्रमादित्य रखना चाहते थे। अतः एक सहमति के आधार पर युवराज का नाम 'ज्योतिरादित्य' रखा गया।[6]

ज्योतिरादित्य सिंधिया का सिंधिया राजवंश की परम्पराओं के अनुसार परम्परागत राज्याभिषेक बारहवें वंशज (महाराज) के रूप में अक्टूबर 2001 में हुआ। राज्याभिषेक का कार्यक्रम शाही परम्पराओं के अनुसार जयविलास महल (ग्वालियर) के दरबार हॉल के प्रांगढ़ में आयोजित हुआ, जिसमें सिंधिया रियासत (ग्वालियर रियासत) से संबंधित पूर्व सरदारों एवं उनके वंशजों ने शाही परम्पराओं के अनुसार नवोदित महाराजा का अभिवादन किया।

श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया के महाराज बनने के बाद अब सिंधिया राजपरिवार में महारानी माधवीराजे को राजमाता जबकि श्रीमंत प्रियदर्शिनी राजे को महारानी के रूप में स्वीकार किया गया। इन्हीं नई पदवियों के ही क्रम में राजकुमार महाआर्यमन को युवराज बनाया गया। ज्योतिरादित्य सिंधिया के राज्यारोहण समारोह में कई वरिष्ठ एवं विशिष्टजन सम्मिलित हुये।

ज्योतिरादित्य सिंधिया भारतीय राजनीति के एक तेजस्वी अग्रणी नक्षत्र है। ज्योतिरादित्य सिंधिया शब्द साहस, वीरता, देशभक्ति का पर्यायवाची बन गया है। किसी विशाल वट वृक्ष के नीचे खड़े होकर जब हम उसके विस्तृत आयतन की ओर विस्मय मुग्ध हो देखते हैं, तब क्या हम यह सोच भी सकते हैं कि यह विराट वृक्ष एक दिन सरसों जैसे छोटे बीज के अन्दर छुपा हुआ था। ज्योतिरादित्य सिंधिया का जन्म उस विराट वट वृक्ष की भांति एक क्रांतिपुंज

के रूप में हुआ। उनका स्मरण करते ही अनुपम त्याग, अदम्य साहस, महान वीरता, एक उत्कृष्ट देशभक्ति से ओत–पोत स्वर्णिम पृष्ठ हमारे सामने साकार हो खुल पड़ते हैं।[7]

श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया का व्यक्तित्व जिस प्रकार बहुआयामी है उसी प्रकार उनके ऊपर विभिन्न कई अन्य प्रभाव भी परिलक्षित होते हैं। एक ओर जहाँ ज्योतिरादित्य भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के प्रभावों से परिपूर्ण दिखलाई पड़ते हैं, वहीं उनकी जीवन पद्धति एवं क्रियाकलापों पर विदेशी समयबद्धता, अनुशासन एवं कार्य संवेदनशीलता स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। जहाँ ज्योतिरादित्य सिंधिया अपने पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों तथा उत्सवों में परंपरागत गणवेश धारण करते हैं, वहीं समयानुकूल परिवेश में आधुनिक गणवेश धारण करने से भी परहेज नहीं करते हैं, जो उनके व्यक्तित्व पर पाश्चात्य प्रभावों को स्पष्ट करता है।

देश में आज युवा नेतृत्व की भीड़ देखी जा रही है, युवाओं में इस प्रकार की ऊर्जा ऐतिहासिक है। सम्पूर्ण ग्वालियर चंबल संभाग एवं मध्यप्रदेश में उत्पन्न इस ऊर्जा का श्रेय ज्योतिरादित्य सिंधिया को जाता है।

ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने पिता माधवराव सिंधिया के पदचिन्हों पर चलते हुये एवं उनके आदर्शों व उनकी दी हुयी प्रेरणा को अपनाकर राजनीति में प्रवेश किया। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भारत की केन्द्रीय राजनीति में प्रदत्त प्रमुख भूमिकाओं को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हुये उन्हें निभाने का कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किया। वह केन्द्र के विभिन्न मंत्रालयों में मंत्री रहे तथा लोकसभा में मुख्य सचेतक की भूमिका को पूरी जिम्मेदारी के साथ अंजाम देने का उनका प्रयास रहा। वर्तमान में ज्योतिरादित्य सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के सदस्य हैं।

निष्कर्ष

ग्वालियर संसदीय क्षेत्र भारतीय गणराज्य के हृदय प्रांत मध्यप्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है। इस संसदीय क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाला सम्पूर्ण भू–भाग सिंधिया कालीन पूर्व ग्वालियर राज्य के अन्तर्गत था। राजनीतिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से ग्वालियर संसदीय क्षेत्र सिंधिया काल से ही अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। ग्वालियर संसदीय क्षेत्र भौगोलिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ग्वालियर संसदीय क्षेत्र के अन्तर्गत चुने जाने वाले विधायक प्रान्तीय मंत्रीमण्डल महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करते हैं, तथा सांसद भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

सिंधिया परिवार का ग्वालियर के संसदीय क्षेत्र में प्रथम और अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रहा है, बिना इस परिवार के ग्वालियर संसदीय क्षेत्र का देश विदेश व प्रदेश के मानचित्र पर उभर कर आना सम्भव न होता। राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय परिप्रेक्ष्य में सिंधिया परिवार की विशेष भूमिका रही है।

संदर्भ सूची

1. सिन्हा, मृदुला. *राजपथ से लोकपथ पर, ''राजमाता की आत्मकथा''* प्रभाव प्रकाशन दिल्ली–पृष्ठ 18–21
2. वही, पृष्ठ 22–26
3. राजमाता विजयाराजे सिंधिया अमृत–महोत्सव विशेषांक–पृष्ठ 120
4. राजमाता विजयाराजे सिंधिया अमृत–महोत्सव विशेषांक–पृष्ठ 120
5. शर्मा मथुरालाल – *''भारत का स्वतंत्रता संघर्ष''* प्रथम संस्करण पृष्ठ 28
6. बुल एच.बी. और हक्सर के.एन. – माधवराव सिंधिया ऑफ ग्वालियर, आलीजाह दरबार प्रेस, ग्वालियर पृष्ठ 111
7. मिश्रा, दिनेशचन्द्र– म.प्र. की राजनीति पर सिंधिया परिवार का प्रथम, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, पृष्ठ 72–82

****